Chapter - 6

षष्टम् अध्याय

गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व - विकास एवं स्वरूप

प्राक्कथन

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि कृतित्व के अध्ययन के लिए यह अनिवार्य है कि कर्त्ता की कृतियों का सर्वांगीण परिचय प्राप्त कर लिया जाय, क्योंकि वे ही, कृतित्व की परिणाम होते हुए भी, कालान्तर से कृतित्व की एक मात्र प्रमाण बन जाती हैं। पूर्व अध्याय में गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व की प्रमाण-स्वरूपा समस्त उल्लिखित एवं उपलब्ध कृतियों के विषय में विचार किया जा चुका है, अत: सम्प्रति उनकी कृतियों के विवरणात्मक अध्ययन के आधार पर उनके कृतित्व के स्वरूप एवं उसके विकास का अध्ययन किया जा सकता है। वस्तुत: गोविन्द गिल्ला भाई ने साहित्य के क्षेत्र में जो भी किया है, वह उनके कृतित्व की अभिव्यक्ति कहा जा सकता है। परन्तु उनके कृतित्व के अध्ययन के लिए उनकी उपलब्ध कृतियों के अतिरिक्त न कोई और प्रामाणिक आधार है, और न कोई माना जा सकता है। अत: पूर्व अध्याय में उनकी कृतियों के विवरणात्मक अध्ययन के पश्चात् प्रस्तुत अध्याय में उनके कृतित्व के स्वरूप तथा विकास का अध्ययन किया जा रहा है, जिसका अध्ययन-क्रम निम्नलिखित होगा :

(१) कृतित्व का आधार

(२) कृतित्व का स्वरूप

१- सामान्य परिचय तथा वर्गीकरण

२- कृतित्व : स्वरूप एवं विकास

३- आचार्यत्व : ,, ,,

(३) उपसंहार

१। कृतित्व का आधार

१।१ कृतियों का वर्गीकरण और व्याख्या

पंचम अध्याय में दिये गये गोविन्द गिल्ला भाई की कृतियों के परिचय से स्पष्ट हो जाता है कि उनके कृतित्व का परिवेश इतना व्यापक है कि उसे केवल एक ही शीर्षक के अन्तर्गत सीमित कर सम्यक् रीति से समझा नहीं जा सकता । अत: यह स्वाभाविक है कि कृतित्व के अध्ययन से पूर्व उसकी कुछ कोटियां निर्धारित कर ली जायं, जिसके लिए कृतियों का वर्गीकरण अनिवार्य हो जाता है ।

पूर्व अध्याय के अध्ययन से यह स्पष्ट ही है कि गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त कृतियों को मूलत: दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है : १- मौलिक काव्य कृतियां अथवा सृजनात्मक साहित्य (क्रिएटिव लिटरेचर) २- शास्त्रीय आदि साहित्य या भिन्न सृजनात्मक साहित्य (नान-क्रिएटिव लिटरेचर) ।

कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रथम प्रकार का साहित्य गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व के कवित्व पक्ष से संबंधित है, जबकि द्वितीय प्रकार का साहित्य उनके आचार्यत्व की अभिव्यक्ति का परिणाम है । कवि के कृतित्व के उक्त दोनों रूपों या पक्षों के स्वरूप आदि के विषय में विचार करने से पूर्व आवश्यक यह है कि उनकी उन कृतियों का परिचय प्राप्त किया जाय, जो उनके कृतित्व की उपलब्ध आधार हैं। जैसा कि पंचम अध्याय में किया जा चुका है । परन्तु कृतियों के एकाधिक रूप में प्राप्त होने तथा अन्य कारणों से, पूर्व अध्याय का कृति परिचय प्रस्तुत अध्याय की दृष्टि से अधिक विस्तृत कहा जा सकता है, अत: सर्वप्रथम गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त कृतियों का परिचय, रचना काल के साथ, वर्गीकृत तालिकाओं में प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे आगे कृतित्व के विभिन्न रूपों के अध्ययन के लिए सुस्पष्ट आधार संभव हो सके ।

काव्य साहित्य

क्रम सं०	कृति नाम	रचनाकाल	प्राप्त	अप्राप्त	विशेष
१	विश्व दर्पण	सं० १९२०[1]		,,	गुजराती भाषा में
२	विवेक विलास	सं० १९२० से १९८०	,,		हिन्दी में नीति काव्य।
३	कुधारा पर सुधारा नी चढाई	सं० १९२५[2]		,,	गुजराती भाषा में
४	व्यभिचार निषेध बावनी	सं० १९२५[3]		,,	,, ,,
५	विष्णु विनय पच्चीसी	सं० १९३७	,,		हिन्दी भक्ति विनय काव्य
६	परब्रह्म पच्चीसी	सं० १९३७	,,		,,
७	प्रबोध पच्चीसी	सं० १९३७	,,		,, नीति काव्य
८	शिखनख चंद्रिका	सं० १९४१	,,		,, शृंगार काव्य
९	राधा रूप मंजरी	सं० १९४२	,,		,, ,,
१०	प्रवीण सागर की १२ लहर	सं० १९४५	,,		,, ,,प्रबंध
११	राधा मुख षोडशी	सं० १९५०	,,		,, ,,
१२	समस्या पूर्ति प्रदीप	सं० १९५० से १९७०	,,		,, ,,
१३	पयोधर पच्चीसी	सं० १९५२	,,		,, ,,
१४	नैन मंजरी	सं० १९५३	,,		,, ,,
१५	छवि सरोजिनी	सं० १९५४	,,		,, ,,
१६	प्रेम पच्चीसी	सं० १९५४	,,		,, ,,
१७	गोविन्द ज्ञान बावनी	सं० १९६०	,,		,, नीति विवेक
१८	पावस पयोनिधि	सं० १९६२	,,		,, प्रकृति काव्य
१९	षट् ऋतु वर्णन	सं० १९६६	,,		,, ,,
२०	प्रारब्ध पचासा	सं० १९६६	,,		,, नीति विवेक

१-स्मरण पोथी, पृ० ७।
२- वही, पृ० ८।
३- वही, पृ० ८।

क्रमसं०	कृति का नाम	रचनाकाल	प्राप्त अप्राप्त	विशेष
२१	बोध बत्तीसी	सं० १९७२	,,	हिन्दी भक्ति नीति विवेक
२२	यश वर्णन	अज्ञात	,,	,, प्रशंसित काव्य

तालिका २ शास्त्रीय साहित्य

१	लच्छन बत्तीसी	सं० १९२६	,,	,, नीति शास्त्र
२	भूषण मंजरी	सं० १९४५	,,	,, कवि शिक्षा
३	शृंगार षोडशी	सं० १९४५	,,	,, ,,
४	भक्ति कल्पद्रुम	सं० १९४५	,,	,, भक्ति शास्त्र
५	वक्रोक्ति विनोद	सं० १९५४	,,	,, काव्यशास्त्र
६	शृंगार सरोजिनी	सं० १९६५	,,	,, ,,
७	श्लेष चंद्रिका	सं० १९६८	,,	,, ,,
८	रत्नावली रहस्य	सं० १९७१	,,	,, ,,
९	शब्द विभूषण	सं० १९७५	,,	,, ,,
१०	अन्योक्ति अरविन्द	सं० १९७८	,,	,, ,,
११	अलंकार अंबुधि	अज्ञात	,, अपूर्ण	,, ,,
१२	एकाक्षरी कोष	,,	,, ,,	,, कोष
१३	अनेकाक्षरी कोष	,,	,, ,,	,, ,,
१४	अनेकार्थ कोष	,,	,, ,,	,, ,,
१५	अंक अभिधान मंजरी	,,	,, ,,	,, ,,
१६	रस रत्नाकर	अज्ञात	,,	काव्य शास्त्र

तालिका ३ गुजराती अनुवाद

१	अमरकोष	अज्ञात	,,अपूर्ण	कोष
२	अभिधान चिंतामणि	,,	,, ,,	,,
३	हैम शेष कोष	,,	,,	,,

४ काव्यप्रकाश प्र०उ०	,,		,,	काव्यशास्त्र
५ साहित्य दर्पण प्रथम तीन परि०	,,		,,	,,
६ रस तरंगिणी	,,		,,	,,
७ शृंगार रत्नाकर	,,		,,	,,
८ रस मीमांसा	,,		,,	,,
९ वक्रोक्ति पंचाशिका	,,		,,	काव्य
१० अमरुशतक	,,	,,		,,
११ चौर पंचासिका	,,	,,		,,
१२ वज्रसूचिकोपनिषद	,,		,,	दर्शन
१३ वात्सायन कामसूत्र अनुक्रमणिका	,,	,,		कामशास्त्र

तालिका ४ टीका - हिन्दी

१ प्रबोध पच्चीसी की टीका	अज्ञात	प्राप्त		संपूर्ण ग्रंथ की टीका
२ शब्द विभूषण	,,	,,	,,	आंशिक टीका
३ गोविन्द हजारा	,,	,,	,,	,,
४ अन्योक्ति अरविन्द	,,	,,	,,	,,
५ वक्रोक्ति विनोद	,,	,,	,,	,,
६ श्लेष चंद्रिका	,,	,,	,,	,,
७ रत्नावली रहस्य	,,	,,	,,	,,
८ नैन मंजरी	,,	,,	,,	,,

टीका - गुजराती

१ शिवराज भूषण की टीका	सं० १९५८	,,		संपूर्ण ग्रंथ की टीका
२ शिवराज शतक	,,	सं० १९७१	,,	,,
३ प्रवीणसागर	,,	सं० १९४५	,,	,,

४	किशन बावनी[१] की टीका	सं० १९७१	,,		,,
५	रसरात ,,	अज्ञात		अप्राप्त	अज्ञात
६	प्रबोध पच्चीसी ,,	,,	,,		संपूर्ण ग्रंथ की टीका
७	गोविन्दज्ञान बावनी,,	,,	,,		,,
८	बोध बत्तीसी ,,	,,	,,		,,
९	प्रारबुध पचासा ,,	,,	,,		,,
१०	विष्णु विनय पच्चीसी	,,	,,		,,
११	परब्रह्म पच्चीसी	,,	,,		,,

तालिका ५ काव्यसंग्रह

१	साहित्य चिंतामणि		,,		नीति विषयक हिंदी काव्य
२	गोविन्द हजारा	सं० १९७५	,,		छंद अलंकारों के उदाहरणों का संग्रह
३	प्रेम प्रभाकर	अज्ञात		,,	प्रेम विषयक हिंदी काव्य
४	हिंदी भाषा के फुटकर कवित्त संग्रह	,,		,,	विषय अज्ञात
५	ब्रजभाषा के कवित्त संग्रह	,,		,,	,,
६	कवि और कविता प्र०भा०	,,		,,	,,
७	,, द्वि०भा०	,,		,,	,,

तालिका ६ संपादन

१	किशन बावनी	सं० १९७१		,,	प्रकाशित
२	शिवराज शतक	सं० १९७१	,,		,,

१- स्मरण पोथी, पृ० २२ ।

३	अमृत धारा	सं० १९२९	,,	,,
४	गोविन्द ग्रंथमाला	सं० १९६७	,,	,,
५	शिवराज भूषण	सं० १९५८	,,	अप्रकाशित ह०प्र०सं० १०१
६	ढोला मारू रो वार्ता	अज्ञात	,,	अप्रकाशित ह०प्र०सं० १५०[१]

उक्त छहों तालिकाओं में गोविन्द गिल्ला भाई की समस्त साहित्य सम्बन्धी कृतियों को वर्गीकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिनमें से अनेक अप्राप्य भी हैं, परन्तु यहां यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि उक्त समूची सामग्री कवि के विराट् कृतित्व के सभी रूपों के अध्ययन के लिए पर्याप्त नहीं हैं। उनके कृतित्व के शोध के स्वरूप के अध्ययन के लिए जो सामग्री प्राप्त है वह इतनी अधिक तथा इस प्रकार की है कि उसे तालिका रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता[२]। अत: यहां केवल इतना ही उल्लेख किया जा रहा है कि उन्होंने हिन्दी के अनेक ज्ञाताज्ञात कवियों तथा उनके साहित्य के विषय में अपनी व्यक्तिगत शोधों के आधार पर न केवल अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का संग्रह किया था, वरन् अनेक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह भी किया था[३], जिसका अत्यन्त अल्प अंश उपलब्ध हो सका है। गोविन्द गिल्ला भाई ने अपनी शोधों के आधार पर कितनी सामग्री एकत्रित की होगी इसका अनुमान मिश्र बंधुओं के इस कथन से किया जा सकता है - "हमारे प्राचीन मित्र और हिन्दी जगत् के सुपरिचित स्वर्गीय कवि गोविन्द गिल्ला भाई जी ने काठियावाड़ से कवियों और गद्य लेखकों की विवेचना सहित एक वृहद् सूची भेजी, जिससे प्राय: ५०० अज्ञात लोगों का हमें पता चला।"[४] आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व के इस पक्ष के अध्ययन

१- प्रस्तुत प्रति कराची से प्रकाशित गुजराती पत्रिका वाक्य सौंदर्य में सं० १९७३ में प्रकाशित हो चुकी है, देखिए स्मरण पोथी, पृ० २४।

२- विशेष विवरण के लिए, देखिए परिशिष्ट सं० ६।

३- द्रष्टव्य है, चतुर्थ अध्याय पृ० १९६३ आदि।

४- मिश्रबंधु विनोद, प्रथम भाग, भूमिका- मिश्र बंधु, पृ० ७।

के लिए समूची सामग्री उपलब्ध नहीं है। परन्तु जितनी भी सामग्री तथा उल्लेख आदि प्राप्त हैं उसके आधार पर कवि के कृतित्व के इस पक्ष का सामान्य अध्ययन अवश्य किया जा सकता है ।

२। कृतित्व का स्वरूप

२।१ सामान्य परिचय तथा वर्गीकरण

उपरोक्त ६ तालिकाओं तथा गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा संग्रहीत प्राचीन हिन्दी साहित्य से संबंधित उपलब्ध सामग्री के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गोविन्द गिल्ला भाई का साहित्यिक कृतित्व अत्यधिक व्यापकतथा वैविध्यपूर्ण था।अत: प्रस्तुत अध्याय में उनके कृतित्व के सभी अंगों का विवेचनात्मक अध्ययन संभव नहीं कहा जा सकता । इसीलिए प्रस्तुत अध्याय में उनके कृतित्व को विभिन्न कोटियों में बांट कर उनके स्वरूप तथा विकास के विषय में ही विचार किया जा रहा है, आगे उनका सविस्तार आलोचनात्मक अध्ययन किया जायेगा ।

गोविन्द गिल्ला भाई के जीवन चरित्र के अध्ययन[१] से यह स्पष्ट ही है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास की दृष्टि से वे आधुनिक काल की परिसीमा में ही आते हैं । आधुनिक काल के जनक श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से गोविन्द गिल्ला भाई आयु में दो वर्ष बड़े थे[२], जबकि उनका देहावसान-सं० १९८१ आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के देहावसान सं० १९९७ से - चौदह वर्ष पूर्व हो गया था[३] । आशय यह कि हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रथम दोनों युगों - भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युगों की - परिसीमा में गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व का प्रारंभ, विकास तथा पर्यवसान हुआ । इन दो काल-खंडों के हिन्दी के साहित्यकारों के कृतित्व के विषय में विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि इस समय हिन्दी में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

१- देखिए चतुर्थ अध्याय ।

२- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ४३८ तथा ४५५ ।

३- वही, पृ० ४८५ ।

जैसे कुछ महान व्यक्तित्वों को छोड़ कर, जिनके कृतित्व में अपने युग की समस्त चेतना प्रतिफलित होती दृष्टिगोचर होती है, शेष सभी साहित्यकार मुख्यत: या तो कवि हैं या गद्यकार। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि गद्यकारों ने कविता नही की या कवियों ने गद्य नहीं लिखा, उदाहरणार्थ पं० प्रताप नारायण मिश्र, उपाध्याय बदरी नारायण प्रेमघन आदि साहित्यकार ऐसे ही हैं जिन्होंने गद्य, पद्य दोनों ही लिखे हैं। गोविन्द गिल्ला भाई इस युग के ऐसे साहित्यकारों में से हैं जो प्रधानत: कवि थे, और वह भी प्राचीन परिपाटी के।[१] उन्होंने प्रथमत: मौलिक गद्य बहुत कम लिखा है और जो लिखा भी है प्रधानत: गुजराती में ही है। अत: प्रधानत: गोविन्द गिल्ला भाई कवि ही थे और अब तक वे हिन्दी साहित्य में इसी रूप में ही ज्ञात हैं। परन्तु वस्तुत: गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व इतना सीमित नहीं है यह वर्तमान अध्ययन से सिद्ध हो जाता है। अपने युग के कुछ अन्य कवियों जैसे सेवक, सरदार, लछिराम तथा नवनीत चतुर्वेदी - के समान रीतिकालीन आचार्यों की शैली में काव्य शास्त्र के ग्रंथ लिख कर,[२] गोविन्द गिल्ला भाई ने अपने कृतित्व की व्यापकता सिद्ध की है। सरदार आदि कवियों ने इस युग में प्राचीन कवियों की काव्य-कृतियों पर सुन्दर टीकाएं लिखी हैं,[३] जो आधुनिक काल में लिखी गयी टीकाओं के विपरीत रीतिकालीन प्राचीन शैली में ही हैं। गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व में सरदार आदि कवियों के कृतित्व की यह विशेषता विशेष रूप से देखी जा सकती है। भारतेन्दु तथा द्विवेदी युग के हिन्दी साहित्यकारों में जिन्हें प्रधानत: गद्यकार कहा जा सकता है - मौलिक नाटक, उपन्यास, कहानी निबन्ध आदि के लिखने की प्रवृत्ति के साथ साथ संस्कृत, अंग्रेजी तथा बंगला आदि अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं से अनेक ग्रंथों के अनुवाद करने तथा प्राचीन साहित्य की शोध, संग्रह, संपादन तथा प्रकाशन आदि की सामान्य प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होती है। उदाहरणार्थ बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्वयं अनेक ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद, काव्यसंग्रह, तथा

१- द्रष्टव्य है : हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ५५६।

२- वही, पृ० ५५३ से ५५६।

३- वही, पृ० ५५४।

प्राचीन हिन्दी ग्रंथों का संग्रह आदि किया था[१]। शिवसिंह सरोजकार द्वारा प्रवर्तित हिन्दी के प्राचीन साहित्यकारों के जीवन वृत्त आदि के विषय में इतिहास तथा स्वतंत्र लेख या पुस्तक आदि के लेखन की परंपरा रही है, जो मिश्रबंधु विनोद में विकसित हुई तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य के इतिहास के रूप में एक प्रकार से पूर्ण हुई है। आगे हिन्दी साहित्य के इतिहास की अभी नयी दिशा में विकसित होना है। परन्तु उक्त दो स्थितियों के बीच में कविरत्न मालाकार जोधपुर निवासी मुंशी देवीप्रसाद आदि जैसे हिन्दी के कवि चरित्रकार अथवा एक प्रकार से हिन्दी के इतिहासकारों की एक ऐसी परंपरा रही है, जो सामान्यत: हिन्दी के विद्वानों में अज्ञात या अल्प ज्ञात ही है। गोविन्द गिल्ला भाई आधुनिक हिन्दी के शोध कर्त्ताओं के अग्रणी, परन्तु अल्प ज्ञात नेता हैं। इन्होंने प्राचीन हिन्दी साहित्य तथा साहित्यकारों से संबंधित सामग्री का संग्रह तथा संरक्षण निस्वार्थ भाव से किया है जो उनके कृतित्व का एक महत्वपूर्ण अंग है।

आशय यह कि अपने युग के प्रधान कवि-लेखकों के समान गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व में जहां एक ओर रीतिकालीन कवित्व, आचार्यत्व तथा टीकाकारत्व दृष्टिगोचर होता है, वहां दूसरी ओर प्रधानत: गद्यकार हिन्दी लेखकों के समान उनके कृतित्व में अनुवादकत्व, संग्राहकत्व तथा शोधकत्व अपने युग सापेक्ष रूप में मिलता है। तात्पर्य यह कि गोविन्द गिल्ला भाई आधुनिक काल के प्राचीन परिपाटी के रीति कालीन आचार्य कवि होते हुए भी अपने युग की कुछ ऐसी विशेषताओं से मंडित सिद्ध होते हैं जो उनके युग की प्राचीन परिपाटी के अनेक कवियों में दृष्टिगोचर नहीं होती तथा प्रमुख रूप से गद्यकार लेखकों में ही मिलती हैं। अत: उक्त कारणों से उनके कृतित्व को सामान्य कवि-कृतित्वों के विपरीत विशेष-कृतित्व कहा जा सकता है। यही कारण है कि अपने जीवन काल में ही गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व हिन्दी भाषी प्रदेश से दूर रहते हुए भी हिन्दी भाषी हिन्दी के तत्कालीन

१- वही, पृ० ४३८ आदि।

विद्वानों के बीच न केवल सुपरिचित था वरन् समादृत भी था ।[१]

यहां इस बात का उल्लेख करना अनुचित न होगा कि हिन्दी भाषा के प्रचार का विधिवत् प्रारम्भ भारेतन्दु युग में ही होता है[२], गोविन्द गिल्ला भाई अपने युग की इस आवश्यकता से अपरिचित न थे तथा उन्होंने इस दिशा में जो कार्य किया है, वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है । ऊपर दी गयी तालिकाओं से स्पष्ट है कि गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा लिखित अधिकांश गद्य-साहित्य गुजराती में हैं तथा उन्होंने अपने तथा अन्य कवियों के हिन्दी ग्रंथों की टीकाएं भी गुजराती में की, जिससे गुजरात की हिन्दी प्रेमी जनता के लिए हिन्दी काव्य-ग्रंथ अधिक सुगम हो सकें । इतना ही नहीं वरन् उन्होंने अनेक हिन्दी ग्रंथों का संपादन तथा प्रकाशन कर गुजरात में हिन्दी के प्रचार को क्रियात्मक रूप से नयी दिशा प्रदान की । इस प्रकार गोविन्द गिल्ला भाई गुजरात तथा सौराष्ट्र में हिन्दी के प्रधान प्रतिनिधि तथा प्रचारक के रूप में आजीवन कार्य करते रहे ।

इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में प्राचीन परिपाटी के कवि होते हुए[२] भी, अपने युग की हिन्दी साहित्य की प्राय: सभी प्रवृत्तियों से सुपरिचित थे तथा प्राचीन परिपाटी के कवि तथा आचार्य होने के साथ साथ और भी बहुत कुछ थे , जो उनके कृतित्व की व्यापकता तथा वैविध्य को सिद्ध करने में सर्वथा सक्षम है ।

आधार भूत कृतियों की ऊपर दी गयी वर्गीकृत तालिकाओं के आधार पर गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व के छ: प्रधान रूप माने जा सकते हैं : १- कवि रूप, २- रीति आचार्य रूप, ३- अनुवादक रूप, ४- टीकाकार रूप, ५- काव्य संग्रहकार रूप, ६- संपादक रूप तथा इसके अतिरिक्त उपलब्ध सामग्री के आधार पर उनके कृतित्व के शोधक रूप की कल्पना की जा सकती है । आधुनिक हिन्दी के आचार्य के समान, जो

१- तुलनीय है : गोविन्द ग्रंथमाला प्रथम भाग उपोद्घात, पृ० २४ से २७ ।

२- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ४६१ ।

३- वही, पृ० ५५६ ।

प्रधानत: काव्यशास्त्र विवेचक, शोधक, संपादक, काव्य-विवेचक या व्याख्याकार टीकाकार है, गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व के कवि रूप के अतिरिक्त शेष सभी कृतित्व रूपों को आचार्यत्व के अंतर्गत स्वीकार किया जा सकता है। वस्तुत: गोविन्द गिल्लाभाई के कृतित्व का आचार्यत्व रूप न पूर्णत: रीतिकालीन है और न ही उसे पूर्णत: आधुनिक कहा जा सकता है। वह सामने संक्रमण काल के अनुरूप हिन्दी रीति आचार्य तथा आधुनिक आचार्य के विकास की मध्यवर्ती शृंखला का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका मूल आधार रीति कालीन ही है/परन्तु उसमें अनेक आधुनिक विशेषताएं भी परिलक्षित होती हैं।

कहने का तात्पर्य यह कि पर्यवसानोन्मुख रीतिकालीन हिन्दी काव्य तथा शास्त्र-परम्परा से, गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व न केवल प्रभावित था, वरन् रीतिकालीन काव्यादर्श तथा शास्त्र विवेचन शैली उन्हें स्वीकार्य भी थी[१], साथ ही अपने नये युग की सुधारात्मक चेतना, ऐतिहासिकता, वास्तविक शोध प्रवृत्ति तथा विज्ञापन प्रकाशन आदि प्रवृत्तियां भी उनके कृतित्व में स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। भारतेन्दु युग की राजनैतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व में पूर्ण अभाव अवश्य है, परन्तु हिन्दी के राष्ट्रीय महत्व को उन्होंने अवश्य स्वीकार किया था और उसे सारे भारत की एक मात्र भाषा के रूप में स्वीकृत किया था[२]। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व बहुत कुछ अपने युग का सच्चा प्रतिनिधित्व करता है। क्योंकि भारतेन्दु तथा द्विवेदी युग को आधुनिक युग अवश्य कहा जाता है/परन्तु वस्तुत: यह संक्रमण काल ही था जिसकी संक्रमणता के प्रभाव से इस युग का कोई लेखक पूर्णत: मुक्त नहीं कहा जा सकता। हां, कुछ लेखक अधिक प्राचीनता प्रेमी तथा तदनुवर्ती थे, जबकि कुछ अपेक्षाकृत अधिक आधुनिक थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जिन कवियों को केवल पुरानी परिपाटी पर कविता करने वाला माना है[३], उन कवियों के कृतित्व में ही नहीं वरन् उनके काव्य-विषयों में

१- द्रष्टव्य है अध्याय सप्तम तथा नवम्।

२- गोविन्द हजारा ह०प्र०सं० २०३, पृ० २, ३।

३- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ५५६।

भी अनेक प्रकार की आधुनिकताएं देखी जा सकती हैं। नवनीत चतुर्वेदी - जिन्हें आचार्य शुक्ल ने पुरानी परिपाटी के आधुनिक कवि कहा है,[१] - के हस्तलिखित साहित्य के अध्ययन के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी के प्राचीन साहित्य को ले कर उन्होंने महत्वपूर्ण शोध कार्य किये हैं, जो अभी तक प्रकाश में नहीं आये, साथ ही अनेक राष्ट्रीय विषयों पर उनके कुछ छंद प्राप्त हुए हैं । इस सब से यही सिद्ध होता है कि भारतेन्दु युग में आधुनिकता का प्रारम्भ तो हो गया था परन्तु रीतिकाल का अंत पूर्णत: नहीं हुआ था । गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व अपने युग के अनुरूप हिन्दी के आचार्य-कवियों की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जो रीतिकाल तथा आधुनिक काल की संधि रेखा पर दोनों युगों की कुछ कुछ विशेषताओं को लिए हुए है । यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व में जो कुछ आधुनिकता मिलती है वह प्रधानत: उनके आचार्यत्व में ही है कवित्व मूल रूप से रीतिकालीन ही है । अत: अध्ययन सौकर्य के लिए उनके कृतित्व को मूलत: दो रूपों में विभक्त किया जा सकता है, जिससे आगे स्वतंत्र रूप से इन दोनों कृतित्व - रूपों के स्वरूप तथा विकास के विषय में विचार किया जा सके :

१- कवित्व

२- आचार्यत्व

२ कवित्व : स्वरूप एवं विकास

गोविन्द गिल्ला भाई के समूचे साहित्यिक-कृतित्व के मूल में उनका कवित्व ही माना जा सकता है, क्योंकि साहित्य की ओर आकर्षित होने के साथ साथ उनमें काव्य रचना की एक सहज इच्छा भी जाग्रत होती है, जिसकी पूर्ति के प्रयास में कवि ने अपने आचार्यत्व को भी विकसित किया । एक स्थान पर काव्य रुचि अथवा काव्य-विषय पर रुचि होने के संवाद में उन्होंने लिखा है कि उनके बाल्य काल में उनके गांव सिहोर में अनेक भाट चारण आदि आते जाते रहते थे, जिनसे .

१- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ५५६ ।

विविध प्रकार की कथा, वार्ता तथा कविता आदि सुनने से उनमें कविता के प्रति विशेष रुचि जागृत हुई एवं उन्होंने जैन साधु श्री पाना चंद जी के सहवास में कुछ कविता लिखना प्रारम्भ किया[१]। अन्यत्र उन्होंने इस विषय में लिखा है कि "मित्रों पर प्रसंगोपात् पत्र में कविता लिखने के लिये फुटकल द्रष्टान्तिक और गूढ कूट तथा समस्या पहेलो आदिक कविता का संग्रह करने लगा । उनसे कविता पर बहुत प्रेम हुवा । तब ए जैन साधु पाना चंद जी की पास जायकें कुछ पिंगल और नाममाला में नन्ददास कृत मानमंजरी और अनेकार्थ पढ़े । उनसे कुछ कविता करने में प्रवेश हुआ "[२]। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि कवि प्रारम्भ से स्वाध्यायी था तथा चमत्कार-प्रधान कविता पर उसकी प्रारम्भ से ही विशेष रुचि थी एवं कविता करने के लिए काव्य शास्त्र का अध्ययन तथा तत्संबंधी ग्रन्थों का संग्रह उसने तभी से प्रारम्भ कर दिया था । आशय यह कि कविता करने की अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए ही कवि में काव्य-शास्त्र रचना तथा संग्रह आदि की प्रवृत्ति विकसित हुई थी । अत: कवित्व को इनके साहित्यिक कृतित्व का मूल माना जा सकता है । साथ ही संख्या, मूल्य आदि दृष्टियों से भी इनकी काव्य कृतियां अधिक हैं, अत: कवित्व को इनके सभी कृतित्व रूपों में प्रधान कहा जा सकता है ।

यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्ला भाई के समूचे साहित्यिक कृतित्व में मूलभूत तथा प्रधान कृतित्व रूप, कवित्व की अभिव्यक्ति, कवि की मातृ भाषा में न होकर, राष्ट्र भाषा में है । यद्यपि इन्होंने सर्वप्रथम कविता करना गुजराती में ही प्रारंभ किया था और शामल भट्ट के आख्यान काव्यों के समान कोई आख्यान काव्य गुजराती में लिखा था[३]। परन्तु आगे चल कर केवल तीन संक्षिप्त रचनाओं को छोड़ कर शेष सभी काव्य-रचना हिन्दी में हैं । इसका कारण जो भी हो परन्तु यह बात गोविन्द गिल्ला भाई के कवित्व की दृष्टि से अपने आप में महत्व पूर्ण है । वैसे कवि ने एक स्थान पर इसका कारण अपना हिन्दी पर प्रेम बताया है[४],

---

१- स्मरण पोथी, पृ० ३, ४ ।

२- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० २० ।

३- स्मरण पोथी, पृ० ३, ४ ।

४- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० ६ ।

परन्तु अन्य उल्लेखों के आधार पर गुजराती में काव्य-शास्त्र की परम्परा के अभाव तथा हिन्दी में उसके होने के साथ साथ हिन्दी की प्रतिष्ठा भी कारण रूप मानी जा सकती है[१]।

गोविन्द गिल्ला भाई की प्रथम हिन्दी रचना काल क्रम के अनुसार 'विवेक विलास' ही है, परन्तु इस रचना में पीछे अनेक छंदों का समावेश हुआ है[२], अत: यह नहीं कहा जा सकता कि उपलब्ध प्रति में कितना अंश प्रारंभिक काल का है और कितना बाद का। इनकी पृथक् प्रकाशित गुजराती रचना 'विश्व दर्पण' भी इसी समय लिखी गयी थी[३]। परन्तु उपलब्ध न होने के कारण उसके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। हां प्राप्त उल्लेखों के आधार पर इतना कहा जा सकता है कि उसका विषय भी विवेक विलास से भिन्न नहीं रहा होगा। विवेक विलास वस्तुत: सुभाषित-संग्रह ही है। कवि ने इसके विषय में लिखा भी है कि "वामे नीति के विविध विषय पर प्रसंगोपात दृष्टान्त देने में काम आवे ऐसे ३१३ कवित्त, सवैया, छप्पय, कुंडलियादिक हैं"[४]। इससे स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई का कवित्व सर्वप्रथम सुभाषितकार के रूप में प्रारम्भ हुआ, जिसका मुख्य आधार प्राचीन संस्कृत तथा हिन्दी के सुभाषितकार कवि थे। कवि ने स्पष्ट रूप से कहा है कि "यह पुस्तक में जितनी कविता है उनमें कितनीक संस्कृत श्लोकों पर से बनाई गई है, और कितनीक स्वकल्पित है तथा कितनीक आधी भाषान्तर और आधी स्वकल्पित ऐसी मिश्ररचना संयुक्त है।"[५] कवि के इन उल्लेखों के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गोविन्द गिल्ला भाई के कवित्व की प्रारंभिक अवस्था नीति विवेक की शास्त्रीय मान्यताओं पर विशेष रूप से आधारित थी तथा उस पर धार्मिक प्रभाव भी अधिक था। आस्तिक गोविन्द गिल्ला भाई के कवित्व की यह

१- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० २०।

२- देखिए अध्याय पंचम, २।३।१।

३- स्मरण पोथी, पृ० ७ और ६३।

४- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० १३।

५- वही, पृ० ६।

एक प्रमुख विशेषता है। परन्तु प्रारम्भिक अवस्था में शृंगार की अपेक्षा नीति, विवेक [illegible], वैराग्य आदि विषयों की ओर कवि का अधिक रुझान दिखाई पड़ता है। सं० १९२० से १९२७ तक, जबकि कवि की आयु १५ से ३५ के बीच में थी, केवल नीति विवेक और भक्ति विषयक रचना ही उन्होंने की है।[१] जबकि सं० १९४१ से १९५४ तक शृंगार कवि का मुख्य विषय रहता है। इसके पश्चात जो काव्य कृतियां स्वतन्त्र रूप से कवि ने लिखी हैं उनका विषय बहुत कुछ मिश्रित है। एक ओर गोविन्द ज्ञान बावनी और प्रारब्ध पचास जैसी नीति विषयक रचनाएं हैं, तो दूसरी ओर षट् ऋतु वर्णन तथा पावस पयोनिधि रचना प्रधानत: शृंगारपरक हैं। आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई का कवित्व क्रमश: विकसित होता गया है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई के कवित्व की अभिव्यक्ति का सूत्रपात गुजराती में होता है परन्तु शीघ्र ही कवि की अभिव्यक्ति का माध्यम गुजराती न रह कर हिन्दी हो जाता है।

गोविन्द गिल्ला भाई के कवित्व के विकास की चर्चा करते समय इस बात का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि उनकी प्रारंभिक रचनाएं बहुत कुछ प्राचीन हिन्दी तथा संस्कृत कवियों की रचनाओं पर आधारित हैं। विवेक विलास के अनेक छंद, भर्तृहरि के नीति शतक तथा अन्य कवियों के छंदों पर आधारित हैं। इस विषय में कवि ने लिखा है कि, "अनेक श्लोकों का भाषान्तर जैसे हमने किये हैं, तैसे प्राचीन कवियों ने भी किया है।"[२] इसी प्रकार परब्रह्म पच्चीसी के सभी छंद संस्कृत की ब्राह्म धर्म तथा विज्ञान विलास नामक रचनाओं पर आधारित हैं, साथ ही कहीं कहीं केनोपनिषद् का आधार भी लिया गया है। कवि ने लिखा है कि "वामे निरंजन निराकार परब्रह्म के विनय के पचीस कवित्त वेद और उपनिषद कहे हुए सूत्रों पर से बनाये गये हैं।"[३] परन्तु परवर्ती रचनाओं में कवि ने स्वतंत्र रूप से छंद लिखे हैं। लेकिन

१- देखिए : तालिका प्रथम।

२- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० ११।

३- वही, पृ० १३।

वहाँ अलंकार-प्रियता विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है। राधा मुख षोडशी, पयोधर पच्चीसी, नैन मंजरी आदि रचनाओं के विषय में कवि ने इस बात को स्वीकार भी किया है[१]। आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई के कवित्व की प्रारंभिक अवस्था की जैसे प्रमुख विशेषता, अनुवाद परकता कही जा सकती है, उसी प्रकार प्रौढ़ावस्था की प्रमुख विशेषता अलंकार प्रियता मानी जा सकती है।

गोविन्द गिल्ला भाई की काव्य कृतियों के विषयों के अध्ययन से यह बात स्वत: स्पष्ट हो जाती है कि उनके कवित्व की व्याप्ति बहुत कुछ लोक-मानस पर आधारित रही है। प्रधानत: उन्होंने शृंगार, भक्ति, तथा नीति विवेक के विषय में ही कविता लिखी हैं, जो तत्कालीन समाज की रुचि की सामान्य सीमा मानी जा सकती है। रीतिकालीन हिन्दी काव्य भी सामान्यत: इन्हीं तीन विषयोंकी सीमा में आबद्ध कहा जा सकता है। परन्तु विशिष्ट कवियों ने उक्त विषयों में से किसी एक पर ही विशेष रूप से लिखा है जो उसकी प्रकृति या रुचि के अधिक अनुकूल माना जा सकता है। परन्तु गोविन्द गिल्ला भाई की प्रकृति या रुचि के विषय में ऐसी कोई विशिष्टता नहीं मानी जा सकती। क्योंकि उन्होंने किसी एक विषय पर विशेष रूप से नहीं लिखा। नीति और शृंगार उनके काव्य की दो प्रमुख दिशाएं रही हैं, जबकि भक्ति को उन्होंने परम्परा प्राप्त एक आचरण रीति के रूप में ही स्वीकार किया था। इसीलिए उनकी भक्ति विषयक रचनाओं में भक्ति भाव का वह रूप दृष्टिगोचर नहीं होता जो हिन्दी के किसी सामान्य भक्त कवि की रचनाओं में देखा जा सकता है। यहाँ उनकी किसी रचना को इस बात के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत न कर उनके उस कथन को उद्धृत किया जा रहा है जो उन्होंने अपनी प्रमुख भक्ति-रचनाओं के विषय में लिखा है, "परमेश्वर को लोको तीन तरह से मानते हैं। एक राम कृष्णादिक अवतारी ईश्वर, जो साकार ईश्वर के अंश है, दूसरा यह जगद के कर्ता शेषशायी भगवान किंवा वैकुंठ निवासी लक्ष्मीपति विष्णु जो सर्व कला संपूर्ण साकार ईश्वर है सो, और तीसरा वेद में कहे हुये निरंजन निराकार

१- गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ० १४, १५ ।

सच्चिदानंद रूप जो ईश्वर है सो, उनमें अवतारी ईश्वर राम कृष्णादिक की स्तुति तो मंगलाचरण में उन्हीं के नाम से की गई है । और सर्व गुण संपन्न साकार ईश्वर जो विष्णु है उनकी स्तुति यह विष्णु विनय पचीसी में अनुप्राशमय पचीश कवित्त में यथाशक्ति की गई है और निराकार ईश्वर की स्तुति परब्रह्म पचीशी में है, उनमें जैसी जाकी रुचि होयगी तैसी वह मान लेयगें ।[१] इस उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि कवि ने जो कुछ मंगलाचरण आदि में भक्ति विषयक छंद लिखे हैं वे वस्तुत: सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के हेतु ही हैं । अत: इस प्रकार की भक्ति रचनाओं को वास्तविक दृष्टि से भक्ति-रचना नहीं कहा जा सकता । अन्यत्र भी अन्य रचनाओं के प्रयोजन आदि के विषय में लिखते हुए कवि ने लिखा है,[२] उससे भी यही सिद्ध होता है कि उनके कवित्व की व्याप्ति की सीमा लोक रुचि थी ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई का कवित्व उनके समूचे साहित्यिक कृतित्व में सर्वाधिक प्रधान तथा मूलभूत है, जिसकी प्रारंभिक अभिव्यक्ति उनकी मातृभाषा गुजराती में ही होती है परन्तु आगे चल कर उसकी अभिव्यक्ति केवल हिन्दी में ही होती है । यद्यपि गोविन्द गिल्ला भाई के कुछ ग्रंथ भक्तिपरक भी हैं तथा एक लघु रचना भावनगर के देसाई छगन लाल संतोष राम की प्रशस्ति में लिखी हुई भी मिलती है परन्तु उनके कवित्व की प्रमुख सीमा नीति तथा शृंगार को ही माना जा सकता है । प्रारम्भ में उनका कवित्व बहुत कुछ प्राचीन कवियों की रचनाओं पर आधारित रहा है परन्तु आगे चल कर वह स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ है ।

२।२ आचार्यत्व : स्वरूप एवं विकास

आधुनिक हिन्दी आचार्यत्व की परंपरा को दृष्टि में रख कर काव्य शास्त्रेतर जो अन्य प्रकार का साहित्य गोविन्द गिल्ला भाई ने लिखा है उस सबको उनके आचार्यत्व की आधार भूत सामग्री के रूप में स्वीकृत किया गया है । सामान्यत: रीति ग्रंथ प्रणेता कवियों को ही हिन्दी के विद्वानों ने आचार्य संज्ञा प्रदान की है,

---

१- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० १३ ।

२- स्मरण पोथी, पृ० ३६, ६३ ।

तथा रीति ग्रंथों के आधार पर ही उनके आचार्यत्व की कल्पना की है[१]। परन्तु आधुनिक काल की परिसीमा में उत्पन्न होने के कारण गोविन्द गिल्ला भाई आचार्यत्व में कुछ ऐसी विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं कि केवल रीति ग्रंथों को ही उनके आचार्यत्व की सीमा के रूप में स्वीकृत नहीं किया जा सकता । साथ ही आचार्य शब्द जिस अर्थ में रीतिकालीन आचार्य कवियों के लिए प्रयुक्त होता रहा है, सैद्धान्तिक दृष्टि से उसी अर्थ में ग्रहण करना तर्क संगत प्रतीत नहीं होता[२]। अत: गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व को उसके वास्तविक अर्थ में समझने के लिए काव्य कृतियों के अतिरिक्त उनका शेष समूचा साहित्य उनके आचार्यत्व की आधार भूत सामग्री के रूप में स्वीकृत किया गया है ।

आगे दिये गये कृति परिचय तथा तालिकाओं के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व उनके कवित्व की अपेक्षा अधिक व्यापक तथा वैविध्य पूर्ण है । उन्होंने नीति शास्त्र, काव्य शास्त्र भक्ति शास्त्र कवि-शिक्षा तथा कोष आदि को लेकर अनेक स्वतंत्र ग्रंथ लिखे हैं[३]। हिन्दी गुजराती के तुलनात्मक व्याकरण के विषय में जो उनकी संक्षिप्त टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं[४], उनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि व्याकरण शास्त्र में भी कवि की विशेष रुचि थी । आगे उनकी इन कृतियों के विषय में विस्तार से विचार किया जायेगा। परन्तु यहां इस बात का उल्लेख किया जा सकता है, कि इन शास्त्र-ग्रंथों की शैली, हिन्दी की प्राचीन शास्त्र लेखन शैली - जो लक्षण उदाहरणों के रूप में लिखित मिलती हैं-के बिलकुल समान हैं । गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व का यह शास्त्रकार रूप हिन्दी के रीति आचार्यों के पूर्णत: समान हैं । परन्तु उन्होंने कोष तथा व्याकरण प्राचीन शैली में न लिख कर आधुनिक शैली में ही लिखे हैं । आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई के इस शास्त्रकार रूप में भी प्राचीनता के आधिक्य के साथ साथ कुछ आधुनिकता भी दृष्टिगोचर होती है, जो उनके संक्रमणशील युग के अनुरूप मानी जा सकती है ।

१- तुलनीय है `हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास `षष्टम भाग -सं० डा० नगेन्द्र, पृ०२५८

२- देखिए अध्याय नवम पृ० ४६५

३- ,, तालिका सं० २ ।

४- गोविन्द गद्य साहित्य, पृ० १ से ६ ह०प्र०सं० २०५ ।

हिन्दी कवियों में अनुवाद करने की प्रवृत्ति बहुत पहले से मिलती है, परन्तु प्राचीन काल में किये गये अनुवादों तथा आधुनिक काल के अनुवादों में न केवल गुण का अन्तर है, वरन् मात्रा का बड़ा अन्तर है। भारतेन्दु-काल से ही हमें हिन्दी में जो अनुवाद की परंपरा मिलती है, वह उससे पूर्व के अनुवाद-साहित्य से अनेक रूपों में भिन्न है। साथ ही पूर्ववर्ती युगों की अपेक्षा अधिक व्यापक भी है। भारतेन्दु तथा द्विवेदी-युग के प्राय: सभी प्रमुख साहित्यकारों ने कुछ न कुछ अनुवाद-कार्य किया है। संस्कृत, बंगला तथा अंग्रेजी साहित्य के इस युग में विशेष रूप से अनुवाद हिन्दी में हुए हैं।[१] गोविन्द गिल्ला भाई संस्कृत के अतिरिक्त बंगला तथा अंग्रेजी भाषाओं को न जानते थे/अत: उन्होंने केवल संस्कृत से हिन्दी अनुवाद किये हैं।[२] साथ ही ये सभी अनुवाद गुजराती में ही किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी के लिए, एक दृष्टि से गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा किये गये अनुवादों का कोई विशेष महत्व नहीं है, परन्तु उनके कृतित्व के स्वरूप तथा विकास का जहां तक संबंध है, उनके इस साहित्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

जैसा कहा जा चुका है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने केवल संस्कृत ग्रंथों का ही अनुवाद किया है। परिणामस्वरूप अपने युग के सभी प्रमुख हिन्दी लेखकों की तुलना में उनके भाषा ज्ञान की संकुचित सीमा स्पष्ट हो जाती है। गोविन्द गिल्ला भाई हिन्दी ग्रंथों को गुजराती तथा गुजराती ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद कर सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्योंकि कदाचित हिन्दी ग्रंथों की गुजराती टीका कर के उन्होंने अपने इस कार्य के एक अंश की पूर्ति करनी चाही हो, तथा जिन ग्रंथों का अनुवाद उन्होंने किया है, उनको देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी गुजराती ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद की आवश्यकता ही न समझी हो। जिस प्रकार के शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद उन्होंने गुजराती में किया है, उस प्रकार के शास्त्रीय ग्रंथ उस समय गुजराती

१- तुलनीय है : हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० ४७१ से ४८४।
२- देखिए : तालिका सं० ३।

में नहीं थे । कदाचित इस अभाव की पूर्ति के लिए ही उन्होंने गुजराती में अनुवाद किये हैं । इस प्रकार उन्होंने अपनी मातृभाषा की भी यथासंभव सेवा की है जिससे उनका मातृ-भाषा-प्रेम समझा जा सकता है ।

गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा अनूदित ग्रंथों के विषयों को देखते हुए स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने केवल उन्हीं विषयों के ग्रंथों को अनुवाद के लिए चुना था, जिनका प्रत्यक्ष संबंध साहित्य तथा साहित्यशास्त्र से है ।[१] वक्रोक्ति पंचाशिका, अमरु शतक तथा और पंचाशिका को छोड़ कर, शेष सभी अनूदित ग्रंथों का संबंध कोष, काव्य शास्त्र, दर्शन तथा कामशास्त्र से है । वक्रोक्ति पंचाशिका आदि जिन काव्य ग्रंथों का अनुवाद गोविन्द गिल्ला भाई ने किया है, उनका विषय तथा शैली उनकी काव्य कृतियों के समान ही है । आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई ने उन्हीं विषयों के ग्रंथों का अनुवाद किया है, जिनका साहित्य तथा साहित्यशास्त्र के साथ निकट का संबंध है तथा जो उनके मौलिक साहित्य लेखन की विषय सीमा से बाहर नहीं है ।

रीतिकाल में ऐसे अनेक कवि मिलते हैं, जिन्होंने अपनी कृतियों पर स्वयं टीकाएं लिखी हैं उदाहरणार्थ भिखारीदास जैसे कवियों का नामोल्लेख किया जा सकता है । परन्तु इन कवियों ने केवल अपने शास्त्रीय ग्रंथों पर ही टीका सामान्यत: लिखी है, मौलिक काव्य कृतियों पर स्वयं कवि द्वारा लिखी गयी टीका सामान्यत: नहीं मिलती। गोविन्द गिल्ला भाई ने एक ओर अपनी कृतियों की टीकाएं लिखी हैं, साथ ही अन्य कवियों की कृतियों पर भी टीका लिखी हैं तथा दूसरी ओर अपनी मौलिक काव्य कृतियों तथा शास्त्रीय काव्य कृतियों दोनों पर टीकाएं लिखी हैं । इसके अतिरिक्त उन्होंने गुजराती तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में टीका लिखी हैं । आशय यह कि हिन्दी कवियों की तुलना में गोविन्द गिल्ला भाई एक ऐसे कवि हैं जिनमें टीका करने की प्रवृत्ति विशेष रूप से मिलती है ।

१-

यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि गोविन्द गिल्ला भाई ने जिन ग्रंथों की हिन्दी टीका लिखी हैं वे प्रबोध पच्चीसी तथा नैन मंजरी के अपवाद के साथ सभी शास्त्रीय ग्रंथ हैं। आशय यह कि इस प्रवृत्ति में गोविन्द गिल्ला भाई रीति कालीन आचार्य कवियों की परम्परा के प्रतिकूल नहीं गये। शेष दो ग्रंथों पर जो टीका लिखी हैं, उसका कारण उन रचनाओं में श्लेष आदि अलंकारों का प्रयोग - बाहुल्य है। कवि ने इस बात का उल्लेख भी किया है[१]। अपनी तथा हिन्दी के अन्य कवियों की गुजराती टीका कवि ने गुजरात की हिन्दी प्रेमी जनता के लाभार्थ ही ~~किया~~ की थी। इसीलिए जिन ग्रंथों पर कवि ने गुजराती टीका लिखी हैं, वे पूरी हैं जबकि जिन ग्रंथों पर हिन्दी टीका है उन में से केवल कठिन अंशों पर ही टीका लिखी गयी हैं[२]। आशय यह कि किसी ग्रंथ की टीका करते समय कवि ने उस ग्रंथ के पाठक वर्ग का विशेष ध्यान रखा है, जो टीकाकार का एक आवश्यक गुण माना जा सकता है।

हिन्दी में ही नहीं, प्राचीन काल से संस्कृत आदि प्राचीन भारतीय भाषाओं में भी किसी एक विषय या दृष्टि विशेष को लेकर अनेक कवियों की सूक्तियों का संग्रह करने की सामान्य प्रवृत्ति चली आ रही है। गोविन्द गिल्लाभाई ने भी अपनी साहित्यिक परम्परा के अनुकूल इस प्रवृत्ति का परिचय कुछ काव्य-संग्रह करके दिया है। परन्तु उनके केवल दो काव्य संग्रहों को छोड़ कर शेष सभी काव्य संग्रह प्राप्त नहीं होते[३]। अत: उनके विषय में विशेष रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु जो काव्य-संग्रह उपलब्ध हैं तथा जिन काव्य-संग्रहों के शीर्षकों का उल्लेख मिलता है, उसके आधार पर केवल इतना ही कहा जा सकता है कि गोविन्द गिल्ला भाई द्वारा किये गये काव्य - संग्रह उनके कवित्व की व्याप्ति की सीमाओं से मुक्त नहीं हैं। आशय यह कि जिस पर उनका कवित्व नीति विवेक तथा शृंगार की

१- गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ० १५।

२- देखिए तालिका सं० ४।

३- ,, ,, सं० ५।

है कि गोविन्द गिल्ला भाई हिन्दी साहित्य के इतिहास को अपनी विशिष्ट योजना के अनुसार लिखना चाहते थे। भाषा कवि चरित्र तथा भाषा कविओ नुं टुंक परिचय आदि नाम से प्राप्त स्फुट कागज पत्रों में इनके इतिहास का प्रारूप देखा जा सकता है। आशय यह कि अपने युग की सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप गोविन्द गिल्ला भाई में हिन्दी साहित्य के इतिहास के विषय में न केवल जागरूकता मिलती है वरन् इतिहास लेखन की इच्छा तथा उसके अनुरूप इतिहास लेखन की योजना भी उनकी उपलब्ध सामग्री के आधार पर सिद्ध की जा सकती है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है, गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व में रीतिकालीन कवित्व तथा आचार्यत्व के साथ साथ आधुनिक कालीन आचार्यत्व की भी अनेक प्रमुख विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व कविता करने की इच्छा की पूर्ति के प्रयास में ही प्रारम्भ हुआ, तथा कवित्व के विकास के साथ साथ कवि के कृतित्व का यह पक्ष भी सतत विकसित होता गया है। सिहोर में आने वाले भाट चारणों तथा जैन साधु श्री पानाचंद जी के सहवास में काव्य के प्रति आकर्षित होने के साथ साथ कवि में साहित्य स्वाध्याय की ऐसी इच्छा जागृत हुई कि जिसकी तुष्टि के लिए उन्हें विभिन्न स्रोतों से स्वाध्याय सामग्री के संचयन की आवश्यकता का अनुभव हुआ। प्रारम्भ में उन्हें स्वाध्याय के लिए अपेक्षित पुस्तकादि जैन साधु श्री पानाचंद जी से प्राप्त हो जाती थी।[१] परन्तु आगे चल कर उन्हें सिहोर से बाहर भी प्रयास करने पड़े।[२] इस प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई में पुस्तक संग्रह की प्रवृत्ति प्रारंभ होती है। परन्तु यहां यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि इस प्रवृत्ति के मूल में केवल काव्य रचना की इच्छा मात्र नहीं थी। उस समय उनमें शास्त्र ज्ञान की भी प्रबल इच्छा उत्पन्न हो चुकी थी। एक स्थान पर उन्होंने अपनी प्रारम्भिक अवस्था में इस प्रकार के किये गये प्रयासों का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है, "विद्वानों का प्रसंग ते विद्या पर विशेष रुचि, हुई, और मित्रो पर प्रसंगोपात पत्र में कविता लिखने के लिए फुटकर दृष्टान्तिक और गूढ़ कूट तथा समस्या पहेली आदिक कविता

१- स्मरण पोथी, पृ० ३।

२- वही, पृ० ४, ५।

का संग्रह करने लगा, उनसे कविता पर बहुत प्रेम हुआ। तब एक जैन साधु पानाचंद जी की पास जाय के कुछ पिंगल और नाममाला में नन्ददास कृत मान मंजरी और अनेकार्थ पढ़े। उनसे कुछ कविता करने में प्रवेश हुआ। तब जैसी तैसी कविता करने लगा। और प्रथम गुजराती भाषा में विश्व दर्पण, कुधारा पर सुधारा की चढाई और व्यभिचार निषेध बावनी, यह तीन ग्रंथ बनाय कें छपवाये। वह देख के कितनेक पंडित मित्रों ने कहा कि तुम्हारी बुद्धि और तर्क शक्ति अच्छी है। इसलिये तुम काव्यशास्त्र के लक्षण ग्रंथ पढ कें कविता करोगे तो बहुत उत्तम और मनोरंजक होयगी। यह सुन कें हम काव्य शास्त्र के लक्षण ग्रंथ ढूंढने लगे परन्तु वह गुजराती भाषा में नहीं होने से हमको मिले नहीं। परन्तु संस्कृत और हिन्दी भाषा में वह हमने देखे/इसलिये संस्कृत और हिन्दी भाषा के काव्य के लक्षण ग्रंथ प्रथम छपे हुये मुम्बई बनारस लखनऊ बांकीपुर और कलकत्ता आदिक नगरों से जितने मिले, तितने मंगवाय लिये और भाषा पढ़ना शरू किया, और ज्यों ज्यों भाषा कें कुछ समझता गया त्यों त्यों जादे रस पाने लगा। उनसे उत्साह बढा और विशेष सर्वोत्तम सर्व साहित्य के कितनेक ग्रंथ जो आजतक नहि छपे है ऐसे लिखय कें मंगाने का विचार किया और सारे हिन्द के कितनेक प्रख्यात स्थलों में से अति सिपारस तें और पत्रो लिख लिख के भाषा काव्य के लक्षण ग्रंथों लिखवाय लिखवाय कें मंगाये हैं।[१]" गोविन्द गिल्ला भाई के इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनमें संग्रह करने की प्रवृत्ति प्रारम्भ से ही थी, जो आगे आवश्यकताओं के बढ़ने के साथ साथ बढ़ती गयी और स्वतंत्र रूप से शोध-प्रवृति के रूप में विकसित हुई। काव्य-रचना में प्रवृत्त होने के साथ साथ उनमें काव्य शास्त्र ज्ञान की इच्छा विशेष रूप से विकसित होती है जिसके परिणाम स्वरूप आगे चलकर उनमें शास्त्र रचना की प्रवृत्ति विकसित होती है तथा उनका शास्त्रकार आचार्यत्व अपना स्वरूप प्राप्त करता है। आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई में साहित्य संग्रह, शोध, तथा शास्त्र रचना की प्रवृत्ति लगभग एक ही समय प्रारम्भ होती हैं, और आगे स्वतंत्र रूप से विकसित होती है।

१- गोविन्द ग्रंथमाला उपोद्घात, पृ० २०।

जिस प्रकार काव्य रचना की इच्छा से प्रेरित स्वाध्याय के परिणाम-स्वरूप गोविन्द गिल्ला भाई में आचार्यत्व के उक्त रूप विकसित हुए उसी प्रकार स्वाध्याय के परिणाम स्वरूप उनमें अनुवाद करने की प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई। काव्य रचना तथा काव्य शास्त्र अध्ययन के लिए भी भाषा कोष पर पूर्ण अधिकार अत्यन्त आवश्यक होता है। इसलिए गोविन्द गिल्ला भाई को संस्कृत तथा हिन्दी के कोषों का गहन अध्ययन करना पड़ा था[१] तथा उसी के परिणाम स्वरूप उन्होंने अमर कोष और हैम कोष का गुजराती अनुवाद किया था[२]। आगे यह प्रवृत्ति केवल कोषों तक ही सीमित न रही और उन्होंने अन्य विषयों के संस्कृत ग्रंथों का गुजराती अनुवाद भी प्रारम्भ कर दिया।

कुछ हिन्दी-साहित्य-प्रेमी गुजराती नागरिकों के आग्रह पर गोविन्द गिल्ला भाई ने क्रमश: सं० १९४५ तथा १९५८ में प्रवीण सागर तथा शिवराज भूषण की गुजराती टीका लिखी है,[३] जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने आगे चल कर अन्य ग्रंथों की गुजराती टीकाएं भी गुजरात की हिन्दी प्रेमीजनता को दृष्टि में रख कर की होंगी तथा भिखारीदास जैसे हिन्दी के आचार्यों के समान अपने शास्त्रीय ग्रंथों की आवश्यकतानुसार हिन्दी टीकाएं की होंगी।

गोविन्द गिल्ला भाई के आचार्यत्व के उक्त विभिन्न रूप कब किस प्रकार विकसित हुए इस विषय में, तिथियों के निश्चित उल्लेख न मिलने के कारण, निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। केवल शास्त्रीय ग्रंथों तथा कुछ टीकाओं के रचना काल का उल्लेख मिलता है[४]। अत: उन्हीं के आधार पर उनके आचार्यत्व के विकास क्रम के विषय में कुछ विचार किया जा सकता है।

१- स्मरण पोथी, पृ० ४, ५।
२- गोविन्द ग्रंथमाला, उपोद्घात, पृ० २१।
३- स्मरण पोथी, पृ० ११, १५।
४- देखिए : तालिका : सं० २ से ५।

लच्छन बत्तीसी गोविन्द गिल्ला भाई की प्रथम शास्त्रीय रचना है जो उन्होंने इक्कीस वर्ष की आयु में सं० १९२६ में लिखी थी । यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि विवेक विलास के कुछ अंश तथा गुजराती काव्य रचनाओं को छोड़ कर शेष सभी काव्य-कृतियां सं० १९३७, या उसके पश्चात की हैं । आशय यह कि गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व के उक्त दोनों पक्ष-कवित्व एवं आचार्यत्व, बहुत कुछ समानान्तर विकसित होते गये हैं ।[१] सं० १९४५ में गोविन्द गिल्ला भाई ने भूषण मंजरी, शृंगार षोडशी तथा भक्ति कल्प द्रुम नामक तीन शास्त्रीय ग्रंथों का प्रणयन किया था । उसी समय उन्होंने अपनी प्रथम गुजराती टीका भी प्रवीण सागर पर लिखी थी । यह उल्लेखनीय है कि गोविन्द गिल्ला भाई के उक्त तीनों शास्त्रीय ग्रंथों के विषय, रूपान्तर से प्रवीण सागर में भी आते हैं। भक्ति की शास्त्रीय चर्चा तो उनके द्वारा लिखित प्रवीण सागर की बारह लहरों में ही एक स्थान पर आयी है।[२] अत: सम्भावना है कि उक्त तीनों ग्रंथों की रचना की प्रेरणा तथा कुछ सामग्री भी उन्हें प्रवीण सागर से प्राप्त हुई हो ।

विशुद्ध काव्यशास्त्रीय विषयों पर ग्रंथ रचना गोविन्द गिल्ला भाई ने सं० १९५४ में प्रारम्भ की तथा जीवन के अन्तिम समय तक यह प्रवृत्ति निरन्तर चलती रही ।[३] इस बीच में उन्होंने अलंकारों तथा नायिका भेद के विषय में ही प्रधान रूप से लिखा है। वैसे प्रासंगिक रूप से अन्य संबंधित विषयों की चर्चा भी की है ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्लाभाई के आचार्यत्व का सूत्र पात तो बहुत पहले ही हो जाता है। परन्तु वह सं० १९४५ के पश्चात् ही प्रौढ़ता, पूर्णता तथा वैविध्य प्राप्त करता है । वस्तुत: यह बात उनके कवित्व के विषय में भी सत्य है । प्रथम तथा द्वितीय तालिका की तुलना कर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उनके कृतित्व के दोनों रूप-कवित्व तथा आचार्यत्व , बहुत कुछ

१- तुलनीय है, तालिका प्रथम तथा द्वितीय आदि ।

२- प्रवीण सागर लहर २८, ५६, ८३ ।

३- तुलनीय है तालिका द्वितीय ।

समानान्तर रूप से विकसित होते हैं । तथा एक के विषय ने दूसरे के विषय कोभी प्रभावित किया है । उदाहरणार्थ शृंगार सरोजिनी में शृंगार के आलंबन नायक नायिकाओं की विस्तार से चर्चा करने के पश्चात् शृंगार के उद्दीपन के रूप में षट् ऋतु-वर्णन नामक ग्रंथ की रचना, एक दूसरे की पूरक सिद्ध होती है । दोनों का रचना काल क्रमश: सं० १९६५ तथा १९६६ है । इस प्रकार कहा जा सकता हैकि गोविन्द गिल्ला भाई के कृतित्व के उक्त दोनों रूप उनके कृतित्व में विभेद के परिचायक न होकर, एकता के परिचायक हैं । वस्तुत: उनका समूचा कृतित्व विशुद्ध साहित्यिक ही था , उक्त भेद अध्ययन के सौकर्य के हेतु किये गये हैं, जो प्रकारान्तर से उनके कृतित्व की व्यापकता सिद्ध करते हैं ।

प्रकाशन तथा संपादन की प्रवृत्ति भी गोविन्द गिल्ला भाई में बहुत पहले ही से दृष्टिगोचर होती है । सं० १९२५ में उन्होंने अपनी प्रथम गुजराती रचना विश्व दर्पण का प्रकाशन किया था[१], जिसके पश्चात उन्होंने अपनी तथा अन्य कवियों की कई रचनाओं का, संपादन तथा प्रकाशन किया है[२]। परन्तु इतना निश्चित है कि इस दिशा में जितना कार्य वे करना चाहते थे, उतना न कर सके । गोविन्द गिल्ला भाई ने जिन जिन ग्रंथों का संपादन तथा प्रकाशन किया था, वे सभी प्राप्त नहीं होते । अत: इस विषय में विशेष कुछ कहा नहीं जा सकता ।

३: उपसंहार :—

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि गोविन्द गिल्ला भाई का आचार्यत्व उनके कवित्व की सिद्धि की इच्छा का परिणाम अवश्य है, परन्तु उसका विकास उनके कवित्व के बहुत कुछ समानान्तर ही होता है, तथा परस्पर एक का प्रभाव दूसरे पर स्पष्ट परिलक्षित होता है, जो उनके समूचे साहित्यिक कृतित्व की एकरूपता तथा उसके विभिन्न अंगों में सामंजस्य का प्रमाण माना जा सकता है ।

१- स्मरण पोथी, पृ० ७ ।

२- तालिका : षष्टम् ।

गोविन्द गिल्लाभाई के साहित्यिक कृतित्व के उक्त दोनों रूपों की तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका कवित्व उनके आचार्यत्व की तुलना में अधिक मूलभूत तथा प्रधान है, विशेष कर कवि की दृष्टि से विचार करने पर तथा कृतियों की दृष्टि से विचार करने पर उनका आचार्यत्व उनके कवित्व से अधिक व्यापक तथा वैविध्य पूर्ण है। इसी प्रकार उनका कवित्व विशुद्ध रीतिकालीन ही है जबकि आचार्यत्व में अनेक तत्व आधुनिक युग के अनुरूप प्राप्त होते हैं। इस प्रकार उनका समूचा साहित्यिक कृतित्व रीतिकाल तथा आधुनिक काल की अनेक विशेषताओं से मंडित सिद्ध होता है। परिणाम स्वरूप रीतिकालीन आचार्य कवियों में आधुनिकता के एकांत अभाव के कारण तथा आधुनिक आचार्यों में प्राय: कवित्व के अभाव के कारण, गोविन्द गिल्ला भाई का कृतित्व विशेष रूप से व्यापक कहा जा सकता है जो उनके संक्रमणशील युग के परिणाम स्वरूप ही माना जा सकता है।